'ताश-घर नगर' ©अशोक चौहान, सैक्टर- 4, न्यू शिमला

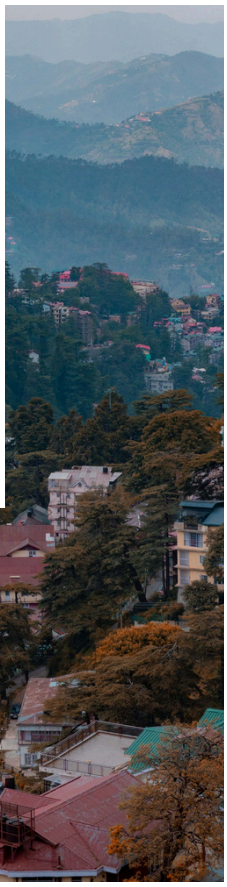

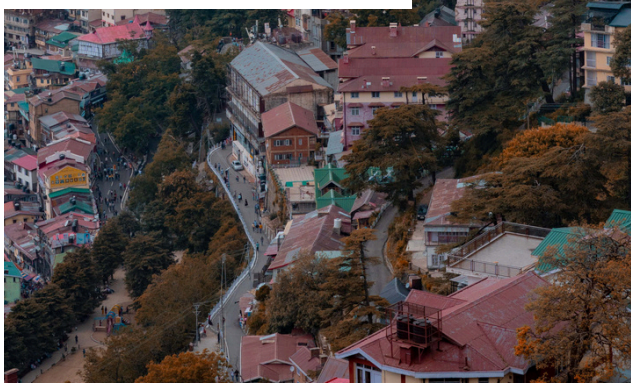

ये तिरछी ढलान,
मकान पर मकान;
हादसे का सामान,
जुटा चुके नादान!
नहीं ये कोई
रॉकेट विज्ञान,
क्यों ख़तरे में है
लाखों की जान?
रूह कांपती है
ये सोच कर,
कहाँ टिकते हैं
ताश के घर!
कमज़ोर नींव
मंज़िलें कई,
ग़ज़ब है
भवन-योजना भई!
उस पर इलाक़ा
भी है पहाड़ी,
धुत्त चालक के
हाथ में गाड़ी;
मध्यम सा कंपन
न झेल पायेंगे,
भरभरा कर पलों में
ढह जायेंगे!

एक सच्चा मित्र शोभा टाकलकर

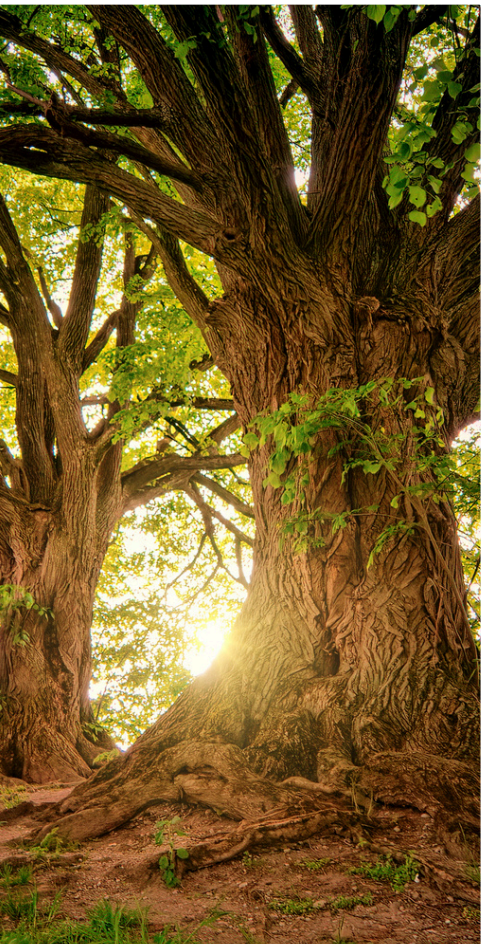

पेड़ बोला मानव से --
नि:शुक्ल ऑक्सिजन तूने गंवाया,
करोड़ों रूपये फेंककर भी ऑक्सिजन खरीद ना पाया।

अच्छे भले मित्र थे हम,
पर तूने कदर ना जानी;
अपनी ऐंठ में रहकर मित्रता तूने गंवाई ।

तहस-नहस कर डाला मुझको,
अपनी आलीशान कोठी के लिए;
ज़रा दर्द ना हुआ तुझको
मुझे यूं बर्बाद करते हुए।

मेरा दर्द, मेरी पुकार ना सुनी तूने,
बस अपनी ही मस्ती में
रौंदकर मुझे चल दिया सीना ताने ।

अब देख दुर्दशा अपनी;
सांस सांस के लिए मोहताज है ज़िंदगी तेरी,
मेरी घुटन को ना समझकर;
अब तू खुद घुट रहा है।

उम्मीद करता हूँ इस सबक से कुछ तो सीखा होगा तूने,
मैं अभी भी तैयार बैठा हूँ मित्रता का हाथ बढ़ाए।
ईश्वर ने मुझे निमित्त बनाकर शुद्ध वायु तुझे दिलाई,
हो शुक्रगुज़ार 'उसका' है इसी में तेरी भलाई।